3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

गोपीमोहन साहा

गोपीमोहन साहा का जन्म १९४० में सिरामपुर हुगली (पं.बंगाल) में हुआ था। छोटी आयु में ही वह क्रांतिकारी दल में शामिल हो गया था।टेगार्ट कोलकाता का पुलिस कमिश्नर था। 'बंगला आर्डीनेंस एक्ट १९१८'के अंतर्गत टेगार्ट ने बंगाल में भारतीय स्वतंत्रता हेतु संघर्ष कर रहे क्रांतिवीरों की गतिविधियों पर लगाम लगा दी थी। बिना किसी कारण किसी को भी अनिश्चित काल के लिए जेलों में रखा जाने लोगा। अनेक क्रांतिवीरों को फाँ

●रविचन्द्र गुप्ता

१९२१ में प्रिंस आफ वेल्स के कोलकाता पहुँचने पर उसके विरोध प्रदर्शनों में गोपीमोहन ने भाग लिया। गोपीमोहन को गुप्त सूचना मिली कि टेगार्ट ने सुभाषचन्द्र बोस को लम्बे समय तक जेल की सींखचों में बंद करने की योजना बनाई है। अत: गोपीमोहन ने निश्चय कर लिया कि वह टेगार्ट का वध करके ही रहेगा। इसी लक्ष्य को पूरा करने हेतु उसने पिस्टल का प्रबंध कर निशाना साधने का अभ्यास कर लिया।

दिनांक १२ जनवरी, १९२४ को प्रात: काल धुंध थी। कोलकाता की चौरंगी रोड पर उसने देखा कि टेगार्ट ओवर कोट पहने जा रहा है। उसने अपनी पिस्तौल से उस पर अनेक वार किए। वह वहीं धराशायी हो गया। गोपीमोहन पकड़ा गया। लेि उसे पता चला कि ''टेगार्ट''के भुलावे में कोई और व्यक्ति मारा गया है। मुकदमे में उसने स्वीकार किया, ''मैं पुलिस कमिश्नर टेगार्ट के अत्याचारों से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए उसका वध करना चाहता था। लेकिन मेरी गलती से वह बच गया।''

एक मार्च १९२४ को गोपीमोहन साहा ने केवल बीस वर्ष की आयु में ही फाँसी का फंदा चूम कर शहादत प्राप्त की। उसका शव उसके घर वालों को नहीं दिया गया। उसके भाई मदनमोहन ने जेल में ही उसका अंतिम संस्कार किया। अंतिम संस्कार के बाद उनका भाई जब गोपीमोहन के वस्त्रादि लेकर बाहर आया तो वहाँ उपस्थित सुभाषचन्द्र बोस व अन्य सैंकड़ों लोगों की सिसकियाँ फूट पड़ीं।

●दिल्ली